Omniscient
(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal)
Vol.1 Issue 3 September 2023 EISSN: 2583-7575

शिक्षकों के गुणात्मक विकास हेतु श्रीरामचरितमानस में वर्णित मूल्यों का अध्ययन

नीरज कुमार, आशीष कुमार

शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
Corresponding author: ashujiasheeshji@gmail.com
Available at https://omniscientmjprujournal.com

सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस में वर्णित उन मूल्यों का ऐतिहासिक शोध विधि के माध्यम से अध्ययन किया गया है, जो सेवारत एवं भावी शिक्षकों के गुणात्मक विकास में योगदान दे सकते हैं। शोध अध्ययन हेतु श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों, दोहों एवं सोरठों का अध्ययन करते हुए उनकी शिक्षकों के गुणात्मक विकास हेतु सार्थकता सिद्ध की गई है। शोध द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि श्रीरामचरितमानस शिक्षकों के गुणात्मक विकास में पूर्णतयः सहायक है, इस अद्वितीय ग्रंथ के अध्ययन के द्वारा शिक्षकों में नवीन मूल्यों का विकास हो सकता है। शिक्षक इन मूल्यों के आचरण द्वारा आत्मविश्वास एवं आत्मज्ञान से परिपूर्ण होकर अपने छात्रों हेतु आत्मकल्याण एवं आत्मनिर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

मुख्य शब्द: *श्रीरामचरितमानस , शिक्षक , गुणात्मक विकास, मूल्य।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव की अंतर्निहित शक्तियों एवं उसके व्यक्तित्व का विकास करने का साधन है। शिक्षा एक प्रक्रिया भी है जो मानव का समाजीकरण करती है तथा उसे एक समाज विशेष का सदस्य एवं योग्य नागरिक बनने हेतु आवश्यक ज्ञान तथा कौशल प्रदान करती है। शिक्षा ही व्यक्ति में नैतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्य विकसित करती है। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी पुस्तक 'पर्सनेलिटी' में लिखा है कि, "सर्वोत्तम शिक्षा वही है जो संपूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।" अतः शिक्षा ग्रहण कर मानव अपने समाज में समायोजन कर आदर्श जीवन निर्वहन करता है। शिक्षा प्रक्रिया में तीन पक्ष महत्वपूर्ण हैं- शिक्षक, विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम।

शिक्षक अपने ज्ञान, शिक्षण कौशल एवं व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों के वांछित गुणों का विकास करते हुए शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति करता है। शिक्षा में आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए विकसित किया गया एक उत्तम पाठ्यक्रम भी तब तक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता जब तक कि उसे पढ़ाने वाला शिक्षक योग्य, जागरूक एवं सक्षम नहीं होता है। अतः समाज एवं विद्यार्थी के चहुँमुखी विकास के लिए शिक्षक को आदर्श एवं प्रशिक्षित होने के साथ- साथ नैतिक, चारित्रिक, शैक्षिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों जैसे गुणात्मक मूल्यों से युक्त होने की आवश्यकता है।

मूल्य व्यावहारिक होते हैं, जबकि व्यवहार व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा का परिणाम होता है । अतः व्यक्ति को स्वयं के बाह्य व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए खुद की आंतरिक प्रेरणा को भी नियंत्रण करना होता है। जिसके

लिए सांस्कृतिक साधनों जैसे धर्म, नैतिकता, सदाचारिता तथा आध्यात्मिकता की आवश्यकता होती है। भारत अनादि काल से आध्यात्मिकता का केंद्र रहा है। भारतीय आध्यात्म सागर में श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवतगीता रूपी दो अनमोल रत्न हैं, जोकि मुख्य रूप से आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों को ग्रहण करने के सर्वाधिक सुलभ साधन हैं।

श्रीरामचरितमानस 15वीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित एक महाकाव्य है। तुलसीदास जी द्वारा इस ग्रंथ की रचना अवधी भाषा, जोकि हिंदी भाषा की ही एक शाखा है, में अयोध्या में सरयू नदी के तट पर चैत्र शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् 1631 से मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् 1633 के मध्य 2 वर्ष 8 माह 26 दिन में की गई। श्रीरामचरितमानस में ज्ञान का विस्तार करने वाले साहित्य तथा वेदों, पुराणों एवं उपनिषदों के प्रभावशाली एवं उपयोगी मानवीय मूल्यों को अत्यंत सरल भाषा में आम जनजीवन तक पहुंचाया गया है। श्रीरामचरितमानस एक धार्मिक कथा काव्य मात्र नहीं है, अपितु इसमें शैक्षिक सन्दर्भों पर समुचित चिंतन विद्यमान है। श्रीरामचरितमानस में गुरु तत्व को अत्यधिक महत्व दिया गया है।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरूं शंकर रूपिणम्।

यमाश्रितोहि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र बन्द्यते।

तुलसीदास जी के अनुसार गुरु एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि नित्य एवं शाश्वत शक्ति है, जो छात्र का उसी प्रकार कल्याण करता है जिस प्रकार शिव के आश्रित रहने पर टेढ़ा चंद्रमा भी सर्वत्र वंदनीय हो जाता है। इस प्रकार श्रीरामचरितमानस अपने मूल्यों के माध्यम से गुरुत्व संपन्न व्यक्तियों को प्रेरित करने वाला ग्रंथ है, जिनके आचरण द्वारा टेढ़े या अपात्र व्यक्ति द्वारा भी गौरवशाली कार्य कराये जा सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन श्रीरामचरितमानस में वर्णित उन आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्यों के बारे में संज्ञान प्रदान करता है, जिनके द्वारा शिक्षकों में गुणात्मक विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण हो सकता है। आध्यात्मिकता एवं सकारात्मकता जैसे गुण उत्तम व्यक्तित्व के प्रमुख गुण माने जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा इन मूल्यों को शिक्षकों के व्यवहार कोश का अंग बनाने तथा उनमें दक्षता विकसित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अधिकांशतः शिक्षा के सामाजिक संदर्भ में शिक्षकों में तथ्यों तथा उनमें निहित तत्वों को समझने की दृष्टि से आध्यात्मिक मूल्यों की आवश्यकता होती है। विगत दो दशकों में आध्यात्मिकता के प्रमुख आयाम जैसे अर्थ निरूपण, संदर्भीकरण, संभाव्यता, आकलन एवं दूरदर्शी चिंतन आदि शिक्षा के सामाजिक संदर्भ में मुख्य रूप से स्वीकार किए गए हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन श्रीरामचरितमानस में उल्लेखित शिक्षकों के गुणात्मक विकास में योगदान करने वाले मूल्यों की विवेचना करने एवं उनकी उपयोगिता निर्धारित करते हुए शिक्षकों की क्षमताओं एवं शिक्षण कौशलों में गुणात्मक अभिवृद्धि करने में उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान में स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक शैक्षिक संदर्भों को समझने एवं उत्पन्न चुनौतियों के उचित समाधान हेतु शिक्षकों में सामर्थ्य विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

Vol.1 Issue 3 September 2023 EISSN: 2583-7575

शोध-उद्देश्य

गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में शिक्षकों के गुणात्मक विकास में योगदान करने वाले विभिन्न मूल्यों का अध्ययन करना।

परिसीमांकन

शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध कार्य में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस का अध्ययन किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक शोध की ऐतिहासिक-प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों की प्राप्ति के साधन

चूंकि विगत घटनाओं के प्रत्यक्ष अवलोकन या परीक्षण के लिए भूतकाल में जाना संभव नहीं है, अतः शोध समस्या से संबंधित उपलब्ध साक्ष्यों तथा प्रलेखों को ऐतिहासिक शोध प्रविधि में आंकड़ों के स्रोत के रूप में माना जाता है। इन स्रोत को मुख्य रूप से दो भागों प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत में बाँटा जाता है। श्री रामचरितमानस ग्रंथ की रचना गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी चिंतन शक्ति एवं कल्पना शक्ति द्वारा की है। अतः इसे शोध कार्य हेतु आंकड़ों व तथ्यों के द्वितीयक स्रोत के रूप में लिया गया है।

संकलित आंकड़ों का मूल्यांकन

ऐतिहासिक शोध विधि में यह आवश्यक है कि संकलित सूचनाओं एवं आंकड़ों का भलीभाँति मूल्यांकन किया जाए। इस मूल्यांकन को ऐतिहासिक समीक्षा नाम दिया जाता है। ऐतिहासिक समीक्षा दो प्रकार की होती है– पहली आंतरिक समीक्षा तथा दूसरी बाह्य समीक्षा। चूंकि श्रीरामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास की मूल कृति एवं पूर्णतः यथार्थ मौलिक रचना है, अतः आंकड़ों की बाह्य समीक्षा की गयी है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता द्वारा श्रीरामचरितमानस में उल्लेखित दोहा, सोरठा एवं चौपाइयों के माध्यम से शिक्षकों के गुणात्मक विकास में योगदान करने वाले मूल्यों का अध्ययन किया गया है। इन मूल्यों के अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य की व्याख्या की गई है कि किस प्रकार श्री रामचरितमानस के अध्ययन से शिक्षकों का गुणात्मक विकास संभव है।

श्रीरामचरितमानस के अध्ययन के फलस्वरूप शिक्षकों के गुणात्मक विकास के लिए उनमें कुशल प्रबंधन, नेतृत्व, विचारशीलता, प्रेरक व्यक्तित्व, सर्वकल्याण की भावना, संयम, अनुशासन, धैर्य, आदर्श आचरण, समस्या-समाधान, कुशल मार्गदर्शन तथा प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति से जुड़ाव आदि मूल्योंका विकास संभव है।

श्रीरामचरितमानस में वर्णित शिक्षक के मुख्य गुण एवं मूल्य

1. अज्ञान एवं अशिक्षा को अपने मन, वचन तथा कर्म द्वारा दूर करना

श्री राम चरितमानस में गुरु शिष्य के अज्ञान, अशिक्षा एवं संदेह को दूर करते हैं तथा छात्र के संताप एवं समस्याओं के निवारण में औषधि की तरह लाभकारी होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास गुरु की वंदना करते हुए उन्हें अमृत की भाँति छात्र के समस्त दुःख समूह का नाश कर देने वाला मानते हैं।

अमिय मूरिमय चूरन चारू।

समन सकल भव रूज परिवारु।।

गुरु मनुष्य के रूप में ईश्वरीय चेतना का प्रतिरूप होते हैं जो छात्र के मोह, अज्ञान एवं अंधकार को सूर्य के समान तेजोमय अपने वचनों से दूर कर देते हैं।

बंदऊ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।

महा मोह तम पुंज, जासु वचन रवि कर निकर।।

गुरु एक कुशल मार्गदर्शक होता है तथा भावनात्मक स्तर पर छात्र के मन की मलिनता को हटाकर उसे सत्य का मार्ग बताने वाला होता है। शिक्षक छात्र को अपने अनुकरणीय व्यवहार से नवीन सत्य ज्ञान खोजने के लिए आवश्यक कुशलता एवं अन्वेषण की दृष्टि प्रदान करता है। इसके साथ ही शिक्षक व्यक्तिपरक या स्वार्थपरक दृष्टिकोण से रहित होता है।

उघरहिं विमल विलोचन हिय के।

मिटहिं दोष दुःख भव रजनी के।

सूझहिं राम चरित मनि मानिक।

गुपुत प्रकट जह जो जेहि खनिक।।

2. छात्र में आत्मविश्वास एवं कर्तव्य के प्रति निष्ठा का भाव उत्पन्न करना

सप्तऋषियों द्वारा शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए पार्वती द्वारा किए जा रहे तप को व्यर्थ बताने एवं वरण हेतु अन्य विकल्पों के सुझाए जाने पर पार्वती जी सप्तऋषियों से कहती हैं कि मैं अपने गुरु नारद के आदेश की अवज्ञा नहीं कर सकती भले ही मेरे आराध्य शिव मुझसे ऐसा करने के लिए सैकड़ों बार कहें।

तजऊ न नारद कर उपदेशू।

आप कहहि सत बार महेसू।।

गुरु वशिष्ठ अपने शिष्य श्रीराम चंद्र जी को कर्तव्यपरायणता एवं पुरुषार्थ पूर्ति हेतु धनुष भंग करने का आदेश देते हैं।

उठऊ राम भंजहु भव चापा।

मेटहु तात जनक परितापा।।

3. सामाजिक एवं नैतिक कार्यों हेतु प्रेरक व्यक्तित्व

गुरु वशिष्ठ राम के वन गमन तथा राजा दशरथ के स्वर्गवास के पश्चात भरत जी को उनके सामाजिक, नैतिक एवं राजकीय कार्यभार को संभालने का उपदेश देते हैं।

मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे।

कहि परमारथ वचन सुदेसे।।

इसी प्रकार वशिष्ठ जी श्री राम को श्राप वश पत्थर की शिला बनी अहिल्या को अपनी चरण रज से उद्धार करने हेतु प्रेरित करते हैं।

गौतम नारी श्राप वश उपल देह धरि धीर।

चरण कमल रज चाहती कृपा करहू रघुवीर।।

4. जन कल्याण तथा छात्र कल्याण की भावना

रामचरित मानस में गुरु लोक हित तथा जनकल्याण हेतु निर्णय लेने वाले हैं। गुरु वशिष्ठ के उपदेशों को मानकर ही प्रजा भरत जी के नेतृत्व में श्री राम की चरण पादुकाओं को सिंहासन पर विराजमान कर यथावत रहने को तैयार होती है।

नगर नारि नर गुरु सिख मानी।

बसे सुखेन राम रजधानी।।

गुरु का अपमान करने वाले शिष्य पर रुष्ट होकर शिव जी उसे श्राप दे देते हैं। परंतु गुरु अपने छात्र का अमंगल होते देख शिव की प्रार्थना करते हुए शिष्य के कल्याण की कामना ही करता है।

संकर दीन दयाल अब ऐहि पर होहु कृपाल।

साप अनुग्रह होई जेहि नाथ थोरेही काल।।

ऐहि कर होहि परम कल्याना ।

सोई करहू अब कृपा निधाना।।

5. विचारशील

रामचरितमानस में गुरु सीधे आदेश देने वाले न होकर शिष्य के साथ विषय पर विचार विमर्श करने वाले हैं। राम वन गमन के पश्चात सभा में आगे की योजना पर चर्चा करते हुए गुरु वशिष्ठ भरत जी के सुझाव की प्रसंशा करते हुए उन्हें समर्थन देते हैं।

अवसि चलिअ बन राम जह, भरत मंत्र भल कीन्ह।

सोक सिंधु बूढ़त सबहीं, तुम्ह अवलंबनु दीन्ह।।

6. ज्ञानी, संयमी, धैर्यवान

शिष्य के द्वारा अपमानित किए जाने पर भी गुरु अपना संयम भंग नहीं होने देते जबकि स्वयं भगवान शिव प्रकट होकर उस छात्र को श्राप दे देते हैं। अतः रामचरित मानस के गुरु ज्ञान, संयम एवं धैर्य जैसे मूल्यों की प्रतिमूर्ति हैं।

जद्यपि तव गुरु के नहिं क्रोधा।

अति कृपाल चित सम्यक बोधा।।

तदपि साप सठ दैहऊं तोही।

नीति विरोध सोहाई न मोही।।

7. अनुशासन एवं समयबद्धता

रामचरितमानस के गुरु अनुशासन एवं समयबद्धता का दृढ़ता से पालन करते हैं। श्री राम तथा लक्ष्मण जनकपुर का भ्रमण करते हुए विलम्ब हो जाने से डरते हुए शीघ्रता से वापस आते हैं।

कौतुक देखि चले गुरु पाहीं।

जानि बिलम्बु त्रास मन माहीं।।

8. कुशल प्रबंधक

गुरु एक कुशल प्रबंधक की भूमिका का निर्वहन भी करते हैं। श्री राम के वन गमन तथा राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात शोकग्रस्त हुए पूरे राजसमाज की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु वशिष्ठ जी हितकारी योजना बनाते हैं।

दल फल मूल कंद विधि नाना।

पावन सुंदर सुधा समाना।।

सादर सब कहँ रामगुरु पठए भरि भरि भार।

पूजि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फरहार।।

भरत मिलाप प्रसंग में ही श्री राम भरत को समझाते हुए कहते हैं कि गुरु वशिष्ठ के कुशल प्रबंधन में तुम्हारे द्वारा राज काज, धर्म, भूमि, धन एवं परिवार के हित में किए गए कार्यों के अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

राज काज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम।

गुरु प्रभाव पालिहि सबहि भल होइहि परिणाम।।

9. सदैव सुलभ

गुरु छात्र हित में सदैव सुलभ रहते हैं। राजा दशरथ चौथेपन में भी कोई संतान न होने के कारण चिंतित होकर सीधे गुरु के पास जाते हैं जहाँ गुरु वशिष्ठ उन्हें पुत्रकाम यज्ञ के लिए प्रेरित करते हैं।

गुरु ग्रह गयउ तुरत महिपाला।

चरन लागि करि विनय बिसाला।।

इसके अतिरिक्त गुरु स्वयं भी छात्र की समस्या समाधान हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों के साथ सदैव सुलभ रहते हैं।

गुरु वशिष्ठ कहूं गयउ हंकारा।

आए द्विजन सहित नृप द्वारा।।

10. नेतृत्वकर्ता

रामचरितमानस में गुरु नेतृत्वकर्ता हैं। राजा दशरथ जनकपुर बारात ले जाते समय गुरु वशिष्ठ का आदेश प्राप्त करते हैं।

सुमिरि राम गुरु आयसु पाई।

चले महीपति संख बजाई।।

गुरुहि पूछि करि कुल विधि राजा।

चले संग मुनि साधू समाजा।।

11. ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान

गुरु अवसर अनुसार छात्र को भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विरासत से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान देते हैं। राम और लक्ष्मण को जनकपुर ले जाते समय गुरु विश्वामित्र उन्हें गंगा अवतरण की कथा सुनाते हैं।

गाधिसून सब कथा सुनाई।

जेहि प्रकार सुरसरि महि आई।।

संपूर्ण अयोध्या में व्याप्त दुःख में स्वयं का संतुलन बनाए रखकर सभी के शोक को अपने ज्ञान दर्शन द्वारा गुरु वशिष्ठ दूर करते हैं।

तब वशिष्ठ मुनि समय सम, कहि अनेक इतिहास।

सोक नेवारेउ सबहि कर निज विज्ञान प्रकास।।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में श्री रामचरितमानस में वर्णित दोहों, सोरठों एवं चौपाइयों का अध्ययन करते हुए एक आदर्श शिक्षक बनने हेतु आवश्यक मूल्यों की व्याख्या की गयी है। प्रस्तुत शोध द्वारा स्पष्ट होता है कि श्री रामचरितमानस ग्रंथ शिक्षकों के कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु आवश्यक प्रमुख गुणों के विकास में पूर्णतयः उपयोगी है। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित एवं लोक में प्रसिद्ध यह ग्रंथ सेवारत एवं भावी शिशिक्षकों में कुशल प्रबंधन, नेतृत्व, विचारशीलता, प्रेरक व्यक्तित्व, सर्वकल्याण की भावना, संयम, अनुशासन, धैर्य, आदर्श आचरण, समस्या-समाधान, कुशल मार्गदर्शन तथा प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति से जुड़ाव जैसे अनेक मूल्यों का विकास करने में सहायक है, जिनके आचरण द्वारा शिक्षक में गुणात्मक विकास होता है तथा वह समाज में आदर्श एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, सौरभ (2017), शिक्षा के सिद्धांतत, एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।

तुलसीदास, गोस्वामी (2017). श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर।

पासी, बी. के. एवं सिंह, पी. (2009), मूल्य शिक्षा, एन. पी. सी., आगरा।

माथुर, पीयूष एवं सिंगवाल, सावित्री (2020), श्रीरामचरितमानस में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता, रचनात्मक अनुसंधान और नवाचार के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, Vol.5, Issue-8, ISSN: 2581-6829.

शर्मा, श्रीराम (2013). रामचरितमानस से प्रगतिशील प्रेरणा, युगनिर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा।

सिंह, अरुण कुमार (2015), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली।

सिंह, पंकज एवं सिंह, छत्रसाल (2020). श्रीरामचरितमानस का बालकों के चारित्रिक विकास में योगदान, International Journal of Research in all Subjects in Multi languages, Vol.8, Issue: 12, ISSN: 2321-2853.